विचार बिन्दु

विचारकों को जो चीज़ आज स्पष्ट दीखती है दुनिया उस पर कल अमल करती है। –विनोबा

अंतर्जाल का मायाजाल रचती है आभासी दुनिया

नये साल जैसे मौकों पर लोग सोशल मीडिया पर अपने आभासी दुनिया के सभी मित्रों को जिनसे वे भौतिक दुनिया में कभी मिले नहीं शुभकामनाएं देते हैं तो उसे पढ़ कर विचार उठता है कि यह आभासी दुनिया क्या है? क्या हमारी भौतिक दुनिया और यह आभासी दुनिया (वर्चुअल) अलग-अलग चीजें है? क्या आभासी दुनिया भौतिक दुनिया की उपज नहीं है? क्या रिश्ता है इन दो दुनियाओं में। फिर विचार आया कि क्या दुनियाएं दो हो सकती है? हां, साहित्य और दर्शन में बहुत सारी दुनियाएं होती हैं। तुम्हारी दुनिया, हमारी दुनिया, गरीबों की दुनिया, अमीरों की दुनिया आदि। हालांकि बहुत से लोगों को लगेगा और मैं भी सोचता हूं कि क्या यह बहुवचन में सम्बोधन दुनियाएं ठीक भी है?अगर अलग-अलग दुनियाएं होती हैं तो फिर यह बहुवचन संज्ञा गलत कैसे हो सकती है? यह भी सवाल मन में उठता है कि आभासी दुनिया का यथार्थ क्या है? उसका यथार्थ और भौतिक दुनिया का यथार्थ क्या अलग-अलग होते हैं? क्या यह भेद उपनिषदों द्वारा समझाये भेद जैसा है? आभासी शब्द अंग्रेजी के 'वर्चुअल' के अनुवाद के रूप में आया है। वैसे ही जैसे इन्टरनेट के लिए अंतर्जाल का उपयोग होने लगा है। भौतिक दुनिया में हम हमेशा रहते हैं। उससे बाहर हमें मृत्यु ही निकाल सकती है। आभासी दुनिया में हम तैयारी करके प्रवेश करते हैं और अपनी मर्जी से उससे बाहर भी निकल सकते हैं। उसमें हम जब तक बने रहते हैं तब तक यह भौतिक एहसास हमेशा बना रहता है कि हम एक ऐसी दुनिया में हैं जहां उस दुनिया में जो दूसरे लोग विचरण करते हैं उनके सामने हम प्रकट रूप में हैं।

आभासी से तात्पर्य है – आभास देने वाला। जो है नहीं मगर होने का भ्रम देता है। अंतर्जाल की यह दुनिया वास्तविकता का आभास देती है मगर वास्तविकता में वह है नहीं। जिस प्रकार आभासी दुनिया की वास्तविकता कुछ और है, उसी तरह उसका सच भी कुछ और है। यह एक 'इल्यूज़न' है। यानि एक भ्रम है। या कहें 'माया' है। तो इस तरह फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाठाम यूट्यूब आदि एक तरह से अंतर्जाल का मायाजाल है। वैसे हमारे यहां तो इस भौतिक दुनिया को भी माया ही बताया गया है। अर्थात यह जीती-जागती दुनिया भी एक प्रकार से आभासी दुनिया ही है। एक भारतीय का जो आस्थावान मन है उसमें भी आभासी दुनिया की मान्यता है। उसी को हम माया कहते हैं। तो यह भी कह सकते हैं कि अंतरजाल की दुनिया एक माया है। मगर इसे आप मायावी न समझ लें। मायावी से कुछ अलग अर्थ निकलता है। सनातन ज्ञान कहता है माया किसी परा शक्ति जिसे हमने ईश्वर नाम दे रखा है का रचा हुआ खेल है जो मानव को भ्रम में बनाये रखता है। इसे पहचानना ही सत्य की खोज है। मायावी इससे उलट है। मायावी अर्थात सत्य की खोज से विचलित होना। वर्चुअल रियलिटि केवल एक अनुभव देती है, एक एहसास देती है। कंप्यूटर मॉनीटर की स्क्रीन सिनेमा के पर्दे की तरह नहीं होती जिस पर छवियां बनती हो। कंप्यूटर मॉनीटर की या स्मार्ट फोन की स्क्रीन एक खिड़की है जिसमें से आप आभासी दुनिया में झांकते हैं। लोग इसमें झांकते ही नहीं है बल्कि भौतिक दुनिया से इसमें कुछ देर के लिए अपने को प्रवेश किया पाते हैं। इस दुनिया में वे अपनी आभासी भूमिका रचते हैं और अपनी आभासी छवि वहां हमेशा के लिए छोड़ कर कर वापस भौतिक दुनिया में लौट आते हैं।

मानव एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था चाहता रहा है जिसमें उसका एक स्थान हो और जिसमें दूसरों के साथ उसके संबंध लगभग स्थायी हो तथा सामान्यत: स्वीकृत मूल्यों व विचारों पर आधारित हो। मगर आधुनिक औद्योगिक समाज में परम्पराएं और सार्वजनिक मूल्य तथा अन्यों के साथ असली सामाजिक व्यक्तिगत रिश्ते अब अस्वीकृत होने लगे हैं। आधुनिक लोक मानव एकाकी हो चला है, भले ही वह भीड़ का हिस्सा हो। उसकी अपनी ऐसी कोई मान्यताएं नहीं होती जिनका वह अन्यों के साथ साझा कर सके। उसे संचार माध्यमों से सिर्फ नारे और विचारधाराएं ही मिलती हैं। बहुत से लोग मानते हैं कि ऐसे में वह आभासी दुनिया में प्रवेश करके अपना वजूद खोजता है। शायद अपने आप को तलाशता है। मगर उसे वहां कौन मिलता है? सबसे पहले तो वह खुद ही खो जाता है। उस जैसे ही खोये हुए लोग ही उसे आभासी दुनिया में मिलते हैं। शोधकर्ताओं का मानना है कि नई इमर्सिव तकनीक से अलगाव हो सकता है, क्योंकि जब सामाजिक जरूरतें ऑनलाइन पूरी होने लगें तब लोगों को इन-पर्सन इंटरेक्शन की उतनी जरूरत नहीं होगी। और जब आभासी वास्तविकता लोगों के दैनिक जीवन का हिस्सा बन जाती है तो अधिक से अधिक लोग अपना अधिकांश समय आभासी स्थानों पर बिताना पसंद क्यों न करें। भविष्यवादी रे कुरज ने कहा था कि 2030 के दशक तक, आभासी दुनिया की वास्तविकता पूरी तरह से यथार्थवादी और सम्मोहक हो जाएगी और हम अपना अधिकांश समय आभासी वातावरण में बिताएंगे। सिद्धांतत: हम आभासी इंसान बन जाएंगे। ऐसा पलायनवाद कोई नई बात नहीं है। तब यह सवाल स्वाभाविक ही पूछा जा सकता है कि क्या आभासी पलायनवाद को कभी भी अच्छे के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है? पलायनवाद पर सबसे पुराना दर्ज शोध 1940-1950 के दशक का माना जाता है जब शोधकर्ताओं ने पहली बार मीडिया की खपत और जीवन की संतुष्टि के बीच संबंधों की पड़ताल शुरू की थी। ऑनलाइन जीवन जीने का विचार, या नियमित समाज से बाहर, काफी हद तक खतरनाक और अस्वस्थकारी रूप में देखा जाता है। सामाजिक अलगावों को चुनने वालों पर किए गये अनुसंधानों की भी कुछ रिपोर्टें आई हैं जो इसके नकारात्मक पक्ष को दर्शाती है। इंटरनेट और आभासी वास्तविकताऐं सामाजिक जरूरतों की पूर्ति और बाजार की ताकतों द्वारा उस तरफ धकेले जाने का रास्ता प्रशस्त करती है। वहां जिस आसानी से जो संतुष्टि मिलती है वह इतनी मोहक होती है कि उसकी लत में दूँ गया उपभोक्ता समाज से शारीरिक रूप से कभी कभी पूरी तरह कट जाता है। जैसे-जैसे इंटरनेट तथा उसके रियलिटी प्लेटफ़ॉर्म पैसों के लिहाज से किफायती होते जाते हैं वैसे-वैसे आभासी दुनिया में अधिक समय बिताने का आकर्षण बढ़ता जाता है तथा उसका विरोध करना कठिन होने लगता है।

> **मेटा वर्स जैसी तेजी से विकसित हो रही तकनीक कार्यात्मक और पलायनवादी दोनों की असीमित संभावनाओं का एक ऐसा द्वार खोलने जा रही है जो एक चमत्कारिक समानांतर दुनिया प्रदान करता है। लेकिन समस्या उसके व्यवसायीकरण की है।**

आभासी एक दूसरा जीवन है। वह कुछ व्यक्तियों के वास्तविक जीवन की जगह ले सकता है, लेकिन यह अच्छा भी हो सकता है और बुरा भी हो सकता है। यह तर्क भी दिया जाता है कि कैसे कह सकते हैं कि एक आभासी जीवन जो किसी के भौतिक जीवन से बेहतर है वह एक बुरी चीज है? यदि कोई व्यक्ति अपनी बुनियादी मानवीय जरूरतों को एक विशाल आभासी दुनिया में पूरा करने में सक्षम है, तो ऐसा कैसे कह सकते हैं कि उसे ऐसा नहीं करना चाहिए? मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि यह संभव है कि आभासी वास्तविकता समय के साथ किसी व्यक्ति की सामाजिक और भावनात्मक जरूरतों को काफी हद तक बदल दे। वास्तविक सामाजिक अंत:क्रियाओं की उसे ज़रूरत या लालसा नहीं रहती क्योंकि वे उसके लिए परदेसी हो सकती हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि आभासी वास्तविकता हमारे जीवन को बेहतर नहीं बना सकती। इस तर्क पर यह सवाल उठता है कि क्या इसका मतलब है यह है कि हम, एक संस्कृति के रूप में, अब उनके और हमारे जीवन पर इस डिजिटल दुनिया के सकारात्मक प्रभावों से अवगत नहीं हैं?

हमारे समाज में और शायद सभी समाजों में पलायनवाद का कुछ हद तक नकारात्मक अर्थ है। यह वास्तविक दुनिया के तथ्यों का सामना करने में असमर्थता दर्शाता है। फिर भी, सभी लोग कभी न कभी पलायन करते हैं। पलायनवाद एक प्राकृतिक तंत्र प्रतीत होता है, मन को इसकी आवश्यकता होती है। जो लोग अपने दैनिक जीवन की सामान्यता से असंतुष्ट हैं वे एक काल्पनिक दुनिया के विसर्जन में आनंद पा सकते हैं। अन्य लोग जो रिश्तों को निभाने में असमर्थ हैं, वे जापान के ओटोम गेम्स या किसी किसी उपन्यास या फिल्म के दृश्य में अपने लिए सांत्वना तलाश करते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि इन वातावरणों की अपील इतनी नहीं है कि वे वास्तविकता से पूरी तरह से बचने में हमारी सहायता करते हैं। बल्कि, यह है कि वे हमें विश्वास दिलाते हैं कि हम अपने आप को फिर से बना सकते हैं और बदल सकते हैं। इसलिए कुछ विशेषज्ञ यह मानते हैं कि इस तरह, समाज की व्यापक अस्वीकृति की मजबूरी को स्वीकार करने की बजाय, आभासी दुनिया हमारे लिए खुद की जांच करने के नए तरीके खोल सकती है। परंतु सभी चीजों की तरह, आभासी वास्तविकता को भी अस्वास्थ्यकर चरम पर ले जाया जा सकता है, और इस तरह का बदलाव सामाजिक जरूरतों को पूरी करने को फिर से परिभाषित करने का उद्यम बेचैनी का सबब बन सकता है। बहुतों को लगता है कि तमाम चेतावनियों के बीच ऊबी हुई तथा एकाकी आत्माओं के लिए आभासी पलायन का वादा परेशान करने वाला नहीं बल्कि रोमांचक है।

मेटा वर्स जैसी तेजी से विकसित हो रही तकनीक कार्यात्मक और पलायनवादी दोनों की असीमित संभावनाओं का एक ऐसा द्वार खोलने जा रही है जो एक चमत्कारिक समानांतर दुनिया प्रदान करता है। लेकिन समस्या उसके व्यवसायीकरण की है। डिजिटल तकनीक की सबसे बड़ी कंपनियां इमर्सिव डिजिटल दुनिया की खोज में गेम निर्माताओं और स्टार्ट-अप्स में शामिल होने लगी हैं।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

अमरत्व से नश्वरता तक: एक कैंसर नाशक भस्मासुर की खोज

रक्त कैंसर माइलोइड ल्यूकीमिया: माइलोब्लास्ट से माइलोइड श्रंखला के श्वेत रक्त कण उत्पन्न होते हैं। उत्पन्न होने के बाद ये श्वेत कण बाल्य अवस्था, किशोर अवस्था से गुजर कर परिपक्व होते है। माइलोब्लास्ट से प्रोमाइलोसाइट और माइलोसाइट होते हुए परिपक्व श्वेत कोशिकायें बनती हैं। परिपक्व होने पर ही ये कोशिकायें रक्षा संस्थान में अपना निर्धारित कार्य सुचारूप से कर पाती हैं। अक्यूट माइलोइड ल्यूकीमिया (तीर्व गति का माइलोइड रक्त कैंसर) का एक रूप हाता हैं अक्यूट प्रोमाइलोसाइट ल्यूकीमिया। अपरिपक्व प्रोमाइलोसाइट का यह कैंसर 1950 में चिन्हित हुआ। ये कैंसर काशिकायें टॉक्सिक एन्जाइम्स और ग्रेन्यूल्स से भरी होती है। परिपक्व कोशिकाओं में ग्रेन्यूल्स के ये तत्व रोगाणु, विषाणु और परजीवियों को नष्ट कर शरीर की रक्षा करते हैं। अपरिपक्व कैंसर कोशिकाओं से बेवजह फूट कर ये टाक्सिक तत्व घातक रक्तस्राव या टोक्सीमिया करते हैं, जो प्राणघातक हो सकता है।

इस कैंसर की विशेषता होती है कि कैंसर कोशिकायें प्रोमाइलोसाइट की अपरिपक्व अवस्था में ठहर जाती हैं, पूर्ण परिपक्व श्वेत कोशिकायें नहीं बन पाती। अत: कैंसर चिकित्सकों का सोच था कि अगर ऐसी दवा मिल जाय जो इन अपरिपक्व कोशिकाओं को परिपक्व कर दे तो कैंसर से निजात मिल सकती है। यह एक रोचक पहलू था। चिकित्सक उत्साहित थे लेकिन यह प्रयोग सीधा ऐसे कैंसर रोगियों पर तो किया नहीं जा सकता था। बाहर टेस्टटयूब में सैंकड़ों ऐसी दवाओं का प्रयोग कर देखा गया जिनके ऐसा होने की संभावना थी।

एक रसायन, रेटिनोइक एसिड, जो विटामिन ए का एक प्रारूप था, मिला, जो असर कारक था। रक्त कैंसर की चिकित्सा करने वालों के लिए यह एक महत्वपूर्ण खोज थी। औषध कम्पनी की प्रयोगशाला ने रेटिनोइक एसिड तैयार कर कैंसर रोगियों पर प्रयोग करने के लिए भेजा। परिणाम उत्साहवर्धक थे। प्रोमाइलोसाइट कोशिकायें परिपक्व होकर समान्य कोशिकायें बन गईं। कैंसर चिकित्सा को नई दिशा मिल गई। लेकिन कैंसर विशेषज्ञ शीघ्र ही हतोउत्साहित भी हो गये जब पाया कि कुछ में तो रेटिनोइक एसिड कारगर था बाकी में नहीं। जिनमें कारगर था उनमें कोई ऐसी विशेषता के साक्ष्य

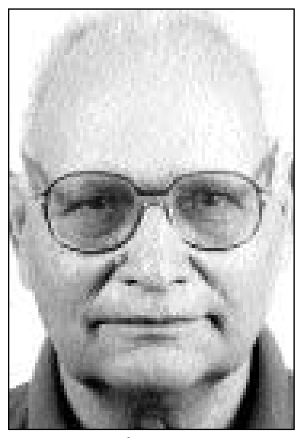

डॉ. श्रीगोपाल काबरा

नहीं थे जिसके आधार पर यह निश्चित किया जा सकता। कुल मिला कर इसकी सार्थकता संदिग्ध साबित हुई।

स्थिति ने अनायास नया मोड़ लिया जब पेरिस के एक कैंसर विशेषज्ञ, जिनको अक्यूट प्रोमाइलोसाइट रक्त कैंसर के उपचार का व्यापक अनुभव था, के पास चाईना के उनके समकक्ष विशेषज्ञ पहुंचे। चाईना के विशेषज्ञों को रेटिनोइक एसिड बनाने का विशेष अनुभव था तो पेरिस के विशेषज्ञ को इसके कैंसर रोगियों में प्रयोग का। चाईना के अनुसंधान कार्ताओं को रेटिनोइक एसिड की अनिश्चित कारगरता के बारे में बताया गया। उन्हे यह भी बताया गया कि जिनमें असर कारगर होता है उनमें कोई विशिष्टता नहीं मिली। असर कारक तो है लेकिन अनिश्चित। तो क्या रेटिनोइक ऐसिड में रासायनिक बदलाव कर इसे और सार्थक बनाया जा सकता है? चाईनीज विशेषज्ञों को ज्ञात था कि रेटिनोइक एसिड के दो प्ररूप होते हैं – सिस-रेटोनोइक एसिड और ट्रान्स-रेटेनोइक एसिड। हो सकता है कि इसमें एक प्रारूप सार्थक हो और दूसरा नहीं। पेरिस में उपलब्ध रेटिनोइक एसिड शायद इन दो प्रारूपों का अनिश्चित मिश्रण था।

भाषा के अवरोध के कारण बड़ी मुश्किल से चर्चा के बाद दानों में इस पर आगे अनुसंधान करने के लिए एक अंतरराष्ट्रीय करार हुआ। तदानुसार चाईनीज अनुसंधान कर्ताओं ने अपनी प्रयोगशाला में रेटिनोइक एसिड के दोनों प्रारूपो को अलग अलग शुद्ध रूप में बनवाकर पेरिस भेजा। डन्होने स्वयं अपने यहां भी अक्यूट माइलोसाइटिक रक्त कैंसर में ट्रांस-रेटिनोइक एसिड का प्रयोग किया और उसकी सार्थकता के बारे में लिखा। पेरिस में 1986 में इसे 24 ऐसे रक्त कैंसर के रोगयों में दिया गया। 23 में अप्रत्याशित सफलता मिली।

पेरिस चिकित्सक ने बताया कैसे प्रोमाइलासाइट कैंसर कोशिकायें सामन्य कोशिकाओं में परिवर्तित हो गई। उन्होने यह भी बताया कि परिपक्व होने के बाद ये स्वेत कोशिकायें अपना अल्प-अवधि जीवन काल समाप्त कर स्वत: ही नष्ट भी हो गईं। ।

विशेष बात यह हुई कि कैंसर कोशिकाओं कि अमरता खत्म हो गई। उनके सामुहिक नष्ट होने से एक बार अस्थि मज्जा पर कुप्रभाव पड़ा जिस पर काबू पा लिया गया। प्रयोग सार्थक सिद्ध हुआ। कैंसर विलुप्त हो गया। लेकिन यह अल्पकालिक था। कुछ ही महिनों में कैंसर वापस लौट आया। संघाई और पेरिस के अनुसंधान कर्ताओं ने आपस में बात कर तब निश्चित किया कि रेटिनोइक ऐसिक के साथ साथ सामान्य कीमोथेरपी भी चालू रखी जाय। इस समिश्रण चिकित्सा के बड़े सार्थक परिणाम सामने आये। कभी अत्यंत तीर्व गति के घातक प्रोमाइलो साइट ल्यूकीमिया को आज सर्वथा ठीक होने वाले कैंसरों में से एक गिना जाता है।

–डॉ. श्रीगोपाल काबरा
वरिष्ठ चिकित्सक, जयपुर

उनियारा का विवेकानंद सर्किल बदहाली पर बहा रहा आंसू

चौरू/उनियारा,(निसं)। मुख्यालय पर नगर पालिका प्रशासन तथा उच्चाधिकारियों की लापरवाही, अनदेखी तथा उदासीनता के चलते हुए लाखों रुपए की लागत से निर्मित उनियारा की शान कहा जाने वाला विवेकानंद सर्किल उपखंड कार्यालय के सामने होने के बावजूद भी अपनी बदहाली पर आंसू रो रहा हैं।

> ■ **आलाधिकारियों के यहां से गुजरने के बाद भी सर्किल का नहीं हो सका विकास**

फिर भी नगर पालिका प्रशासन तथा उच्चाधिकारी बेपरवाह बनकर बैठे हुए हैं। जिसके कारण आज यह सर्किल दिनों दिन उपेक्षा का भी शिकार बनता जा रहा हैं।

विवेकानन्द सर्किल पर उगी झाडियां व टूटी पड़ी कुर्सियां।

जानकार सूत्रों के अनुसार उपखंड कार्यालय के सामने लाखों रुपए खर्च कर विवेकानंद सर्किल का निर्माण किया गया। जिसमें आमजनों के लिए कई सुविधाएं भी उपलब्ध करवाई गई। लेकिन प्रशासन द्वारा समयानुसार ध्यान नहीं देने के कारण वहां की स्थिति बदहाल हो रही हैं। देखरेख के अभाव में इसके अंदर लगी कुर्सियां टूट चुकी हैं और चारों तरफ बम्बूल सहित कई गंदगी के ढेर लगे हुए हैं। वहीं बिजली के तार भी जमीन पर पड़े रहकर हादसे को आमंत्रित कर रहे हैं। हरियाली के नाम पर तो नामोनिशान भी नजर नहीं आ रहा हैं और सफाई के अभाव के मामले में तो यहां कुछ भी नजर नहीं आ रहा है। फिर भी इतना सभी कुछ होने के बाद भी जिम्मेदार अपनी जिम्मेदारी से शायद मुंह मोड़ रहे हैं।

वहीं सबसे बड़ी बात तो यह है कि इसके पास से होकर आलाधिकारियों के गुजरने का सिलसिला बना रहता है। फिर भी आज दिन तक किसी ने विवेकानंद सर्किल की बदहाली की तरफ अपना ध्यान देना मुनासिब नहीं समझा। यदि समय रहते हुए नगर पालिका प्रशासन तथा उच्चाधिकारियों ने इसकी बदहाली की तरफ ध्यान नहीं दिया तो हो सकता हैं यह सर्किल आने वाले समय में अपनी महत्ता खो न दे वही अब तो सवाल यह उठ रहा हैं कि आखिरकार इसकी सुध कौन लेग।

सीएचसी के मरीजों को डेढ साल से नहीं मिल रही धर्मशाला व कैन्टीन की सुविधा

मालपुरा, (निसं)। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र मालपुरा परिसर में रोगी व परिजनों को आवास एवं भोजन उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से विभाग द्वारा 50 लाख रूपयों की लागत से निर्माण करवाई गई धर्मशाला व कैन्टीन प्रशासनिक उदासीनता के चलते बीते डेढ साल से बंद पड़ी है । अस्पताल में भर्ती रोगी के परिजनों को खुले आसमान तले रात गुजारने तथा अस्पताल से दो किमी दूर का सफर तय कर भोजन मिल पा रहा है ।

राज्य सरकार द्वारा सरकारी अस्पतालों में रोगियों को बेहतर चिकित्सा व उनके परिजनों को बेहतर सुविधा मुहैया करवाये जाने को लेकर एनआरएचएम के जरिए 50 लाख रूपयों की लागत से अस्पताल परिसर में धर्मशाला का निर्माण करवाया गया था। जिसमें 5 बडे हॉल व रसोई घर सहित लैटबॉथ की सुविधाएं उपलब्ध करवाई गई थी। धर्मशाला की देखरेख एवं धर्मशाला में कैन्टीन संचालन का जिम्मा बीसीएमओ की निगरानी में सीएचसी प्रभारी को सौंपा गया था। लेकिन

> ■ **जुलाई 2020 से धर्मशाला पर लटके हुए हैं ताले, खुले में रात गुजार रहे रोगियों के परिजन**

बीसीएमओ व अस्पताल प्रशासन की उदासीनता के चलते जुलाई 2020 में कैन्टीन का वार्षिक अनुबंध पूर्ण होने के बाद दोबारा कैन्टीन का टेण्डर करने के बजाय धर्मशाला को बंद कर दिया गया तथा अस्पताल का अतिरिक्त सामान एवं कबाड धर्मशाला के कमरों में भर दिया गया। जिला चिकित्सा अधिकारी को मामले से अवगत करवाने के बावजूद धर्मशाला व कैन्टीन शुरू नहीं होने से रोगी के साथ आने वाले परिजनों को बकहद परेशानी का सामना करना पड़ रहा है । सीएचसी प्रभारी डॉ. जीतराम मीणा ने बताया कि जुलाई 2020 में अनुबंध की समयावधि पूर्ण होने के बाद पुन: टेण्डर जारी किया गया था लेकिन कोई आवेदन नहीं आने से टेण्डर नहीं हो सका।

मालपुरा अस्पताल परिसर में 50 लाख की लागत से बनी धर्मशाला व कैन्टीन पर डेढ साल से ताले लटके हुए हैं।

संसद से सड़क की ओर

एक तरफ पूरा राष्ट्र प्रजातांत्रिक व्यवस्था के अन्तर्गत सम्मानजनक ढंग से 75 वर्ष पूर्ण होने की खुशी में 'अमृत महोत्सव' मना रहा है। दूसरी और देश के महत्वपूर्ण फैसले आज कल संसद के बजाय सडकों पर हो रहे है। मीडिया भी सडकों पर होने वाली गतिविधियों का संसद की तुलना में अधिक कवरेज दे रहा है।

अभी हॉल ही में 90 करोड मतदाताओं का प्रतिनिधित्व करने वाली संसद में पास तीन कृषि कानूनों को मात्र कुछ हजार सडकों पर बैठे आन्दोलनकारियों की जिद्द के आगे उसी संसद को पुन: रद्द करने के लिए विवश होना पडा। यह स्थिति किसी भी प्रजातांत्रिक मुल्क के लिए ठीक नहीं है।

सम्पूर्ण विश्व हमारे लोकतांत्रिक मूल्यों एवं मर्यादाओं की प्रशंसा कर रहा है। देश के प्रजातंत्र की यह भव्य इमारत चार स्तम्भों पर आधारित है। ये है- विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका एवं प्रेस । देश में

डॉ. कैलाश सोडाणी

विधायिका अर्थात् संसद एवं विधान सभाओं को ही सदन में बहुमत के आधार पर सभी महत्वपूर्ण निर्णय लेने का अधिकार एवं कर्तव्य दोनों है। निर्णयों के क्रियान्वयन की जिम्मेदारी कार्यपालिका की है। प्रजातंत्र में निर्णय के लिए बहुमत पर्याप्त है, सर्वसम्मति की अपेक्षा नहीं है। ऐसी स्थिति में निर्णय के साथ-साथ कुछ प्रतिशत लोगों की असहमति एवं विरोध भी जुडा हुआ है। इस विरोध की अभिव्यक्ति भी आवश्यक है, जिससे प्रजातंत्र मजबूत होता है एवं भव्यता बढ़ती है।

किसान आंदोलनकारियों को संसद में लिये गये निर्णयों से असहमति की स्थिति में विरोध का अधिकार था। परन्तु आन्दोलन का स्थान चयन गलत था। राष्ट्रीय राजमार्गो पर बैठकर वर्ष पर्यन्त आवागमन को बाधित करने का कोई औचित्य नहीं था। उस क्षेत्र के लाखों लोगों को जबरदस्त आर्थिक नुकसान हुआ, उनका समय बर्बाद हुआ। विधायिका की राजनैतिक मजबूरी हो सकती है परन्तु सर्वोच्च न्यायालय को लाखों नागरिकों का यह कष्ट दिखाई नहीं दिया, देश के लिए यह चिन्ता का विषय है।

इस सारे घटनाक्रम में मीडिया की भूमिका भी प्रशंसनीय नहीं रही। किसान आन्दोलन की तुलना में इन लाखों राहगिरों के कष्ट एवं आर्थिक नुकसान को प्रेस में बहुत कम स्थान एवं समय दिया गया। देश के सामने सही तस्वीर प्रस्तुत करने में मीडिया की भूमिका

कमजोर रही। मीडिया से ही वातावरण बनता है और उसी वातावरण से निर्णय लिए जाते है। न्यायपालिका एवं प्रेस को यह ध्यान रखना चाहिये कि प्रजातंत्र में मतदाता के रूप में अपना दायित्व निभाने वाले बहुसंख्यक प्राय: शांत एवं असंगठित रहते है।

नि:संदेह प्रजातंत्र में संगठित संख्या का अपना महत्व है। राजनीतिज्ञों को भी कुछ कर गुजरने की प्रेरणा संगठित संख्या से ही मिलती है। दुर्भाग्य से मीडिया को भी संगठित संख्या का समूह आकर्षित करता है। ऐसी विषम परिस्थिति में प्रजातंत्र के किसी एक स्तम्भ से न्याय की अपेक्षा थी, तो वह था सर्वोच्च न्यायालय – जिसने निराश ही किया।

मुट्ठीभर लोग वस्तुत: जो संसद में कमजोर है, अपने राजनैतिक उद्देश्यों के लिए एवं विदेशी षडयंत्र के तहत देश के प्रजातंत्र को संसद से सडक की ओर ले जाने का प्रयास कर रहे है। इस प्रकार के आन्दोलनकारियों की एक विकट समस्या यह है कि धरना प्रदर्शन के लिए पर्याप्त संख्या बल नहीं जुटा पाते है। ऐसे लोगों के लिए विरोध का आसान तरीका सड़क एवं रेल मार्ग को बाधित करना है, जिससे अखबारों की सुर्खियों में अच्छी जगह मिल जाती है। दूसरा लाखों वे लोग जिनका आन्दोलन से कोई संबंध नहीं है, परेशान होते है। उन्ही की परेशानी के दबाव में सरकार आन्दोलनकारियों की मांगे मानने के लिए मजबूर हो जाती है। समय आ गया है कि आज संसद को ऐसे कानून बनाने की जरूरत है, जिससे धरना-प्रदर्शन प्रशासन द्वारा निर्धारित स्थान पर ही होने की बाध्यता हो। सड़क एवं रेल मार्ग बाधित नहीं हो तथा सार्वजनिक सम्पत्ति को किसी प्रकार का नुकसान नहीं होना चाहिये। प्रजातंत्र की श्रेष्ठता के लिए आन्दोलनों की दशा एवं दिशा को बदलना होगा।

डॉ. कैलाश सोडाणी
पूर्व कुलपति,
एमडीएस वि.वि अजमेर

राशिफल

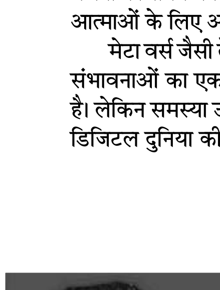

पंडित अनिल शर्मा

गुरूवार 6 जनवरी, 2022

पौष मास शुक्ल पक्ष, चतुरथी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2078, शतभिक्षा नक्षत्र शुक्रवार प्रात: 6:20 तक, सिद्धि योग दिन 3:24 तक, विष्टि करण दिन 12:30 तक, चन्द्रमा आज कुम्भ राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-धनु, चन्द्रमा-कुम्भ, मंगल-वृश्चिक, बुध-मकर, गुरू-कुम्भ, शुक्र-धनु, शनि-मकर, राहु-वृष, केतु-वृश्चिक राशि में।

आज भद्रा दिन 12:30 तक है। आज विनायक चतुर्थी, पंचक है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 8:39 तक, चर 11:14 से 12:32 तक, लाभ-अमृत 12:32 से 3:08 तक, शुभ 4:26 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 7:21, सूर्यास्त 5:44

मेष

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा है। आय में वृद्धि हो सकती है। व्यावसायिक कार्यों का विस्तार हो सकता है। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

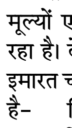

वृष

व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है।

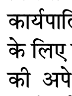

मिथुन

धार्मिक-सामाजिक समारोह में भाग लेने का अवसर मिलेगा। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

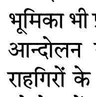

कर्क

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ने का भय है। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

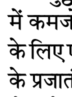

सिंह

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित कार्य योजना बनेगी। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित परामर्श मिलेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

कन्या

परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। रचनात्मक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी।

तुला

व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

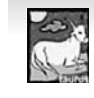

वृश्चिक

घर-परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिचितों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

मकर

व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। व्यावसायिक सुविधाओं में वृद्धि होगी। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।

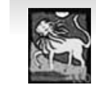

कुंभ

व्यावसायिक कार्यों में सफलता से मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। महत्वपूर्ण कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

मीन

व्यक्तिगत कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। धार्मिक-सामाजिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। मन में असंतोष बना रहेगा।